## पर्युषण पर्व का पांचवां दिन

# अणुव्रती बनने के लिए जैन होना जरूरी नहीं : आचार्य महाश्रमण

**सरदारशहर 9 सितज़्बर, 2010**

आचार्य महाश्रमण ने जैनों के प्रमुख पर्व के पांचवें दिन अणुव्रत चेतना दिवस पर कहा कि अणुव्रत का उद्देश्य संयम की चेतना का जागरण करना है। बिजली पानी का अपव्यय न हो इस ओर ध्यान देना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है, जो श्रावक के बारह व्रतों धारण करता है या अणुव्रत के नियमों को अपनाता है वह असंयम की चेतना का परिष्कार कर लेता है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत बनने के लिए जैन होना जरूरी नहीं है। हर वर्ग का मानव अणुव्रत को स्वीकार कर सकता है और समस्याओं के समाधान में योगभूत बन सकता है।

आचार्य महाश्रमण ने भगवान महावीर के पूर्व जन्मों की यात्रा का विशद विवेचन करते हुए कहा कि भगवान महावीर के 27 जन्मों का विवरण प्राप्त होता है। उसमें एक जन्म वासुदेव त्रिपृष्द्ध का है। इस जन्म में महावीर का जीव परम पराक्रमी, संकल्प का धनी था। अपने पराक्रम से जनता को अनेक उपद्रवों के भय से मुक्त किया। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि राजा का दायित्व होता है सज्जन पुरुषों की रक्षा करना। इस दायित्व को त्रिपृष्द्ध से आत्मसात किया था।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात 1944 में इसी सरदारशहर की धरा से हुआ था। आचार्य तुलसी के अथक प्रयासों से इस आन्दोलन का पंडित नेहरू ने सरहाया। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन को मानव को मानव बनाने वाला आन्दोलन बताया। मुज़्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अणुव्रत द्वारा पूरी मानव जाति को एक सूत्र में आबद्ध कर दिया। देश के नैतिक एवं चारित्र स्तर को ऊंचा उठाने के लिए आचार्य तुलसी ने झौंपड़ी से लेकर राष्ट्रपति भवन तक यात्रा की अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम मानव को उत्थान के मार्ग पर ले जाते हैं।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि आज अणुव्रत की सबसे ज्यादा जरूरत है। बढ़ते भ्रष्टाचार पर अणुव्रत अंकुश लगा सकता है। साध्वी शुभ्रयशा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।